

भूमीलभूभगारमीया उभू लेयनः । गुलिय य्पर्भवप्रवास्त्र । पर् णनण्यभिद्रपृष्ट्वर्ष उपनुणः॥द्र।।ति। व्मण्डारलज्ञाना गणनम् इरेड्डोवेण्डान ने गिपलवंषु हे ज्ञाभाषा भाषा च ज्या मार्ग्स कराने इंडेवेम् ७ एक सभा नार उः।। छ।। जनिमय्भ भर्ते व न व अणु व क ए न था विश्व वित्र क क्रिक्व हः ॥भग्धरगुर्ग्य स्त्रम् स्त्रम् देकवरिमयिएनः भिक्रन्वाइएउः॥नान् लिउनपुरवार द्वाद पुत्र अस्पनीर पित्रभणनहांगी धुजिभानव्यक्तियाः सभगनिग्रद्धःभानगश्चिगग इक्षयाउपवनेभे रुग्यन का इर उः॥ प्राभुक्गे विलाभयुजेविष्टायुरेण्या विजिभागः केगीभूष हर्यार उम्रहेन कि जीप होता है। उस

मगप क जवा राज कि शि

द्वाप्रस्काः युविदेशका अस्टिल्याः थ मुगार्भित मीच्येगत्कवमने भम्त्रभुभजित भुरुवरुविका उवर्षित्रधः॥५॥वर्षात्राम्भु निउविधनते स्वपुर्गकः कर्ष्य पुरुष भिद्रमिर्षे उव मा उव मा कि स्थापि मे प छै: ।। कि।। स्टेनिंग उर्राप्त निंग उर्थे कें हर्विध्यवम् प्राप्त उभाष्ट्रः लक्षेत्रह मयभित्रभेगम्बन्ह्याभित्रिलाभभित्रिक्रिभ उजराता ।। जिल्ला होते व्याप्त । जिल्ला होते व्याप्त । मगपन्न वार उनन एपिड प्वकनः वज जवन्य सिंड्य वित्र न स्ट्रिय भूपस्त प्राप्त । कि विश्व देव । विश्व विभाव में भू विक वे व क्र मम्ब्र भरकाएरिक्वयानियुक्तवेजा है गीवि लाभभिति उग्मन्य एक कंत्र अविव व्यम्भाग्रह्णनः॥प्राप्रकृतिगमन्यरे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ब्याभरतिक एक्ष भक्रातिग्याभकाषः भम्हासम्बल्य अपरम्यासङ्ग्रीरणाव मनिग्उचे गमार्थेष्टः।। हा। मुहे विगिरि उभाउभागमभाषीयभुत्रेभणव हम्य विरिष्प्यञ्चभङ्गीउवाद्यव्मगिष्प्रभाक्ष्य भ ह नकात्प उभार छनवानु गपीय।।।।। गलनप्तक्ष उद्घाभाकलाभविषक "लाल उवस्त्रपात्राभ अधिया भुद्गा जितः भाल लगभक्षणगीहर्युक्रविधलकणः कार्व नहम्पंडगाभ्रक्तवद्वास्त्रमेव इग्रायामीन्य ग्रापं में ब्रूणभ्यालिभ्रियभ्या कुरम्मान् निगरेउउग्यमस्पर्गाराक्त्वक्रयु मील मुज्ञ मले थाएउ था एवं मा भू र उ मक म्बन्द्र प्राप्ताम्। प्रवास्य प्रमुख्य मुब

कि विका

ण्डकभग्उक्षम् अदम्पन्नभद्गणणित्र एयउनगः।।।।त्र अधि भक्ष गेवित् नुक लप्तियः विषामी भितिने की उचा में दे एए उतेः।।म।।भाभक्ककनिर्भन्तकभ रभुषा हाउ भिनिक्य मेन भूव प्रचार पर ये देनः ॥५॥वृद्धिन भाष्ठिभाष्ठेव एउक देवनिव्य िउठा अचक उपितुष्ट्य उपार ।। उगा भारत्य गुप्त के जान मा भूप गया भग्ज लम्न भिर्ण ग्वरू स्यान गा नगणितिनवाद्वतिना । अविविधितना व्यक्षकार उति हथा थल क्षिप भाम्ब उपएएक एउ भिषे भूति प्रमुख ॥ इन्द्रम्प्रमुम् द्वम्य विष्ट्रम् अदेगीत्र उन्नेगि दियं भक्ते नाः १ क

भारे गृवभेषा उति हम् इपगणपीण नवा से वभाषां डी इ.डीयं ए घेंडे न १: ७ भाभक यभाक दिन स्कल दिल्यः उन्नगीमभ मरगी गउक्र ए पउन ।।।र भनुष्राप्य मीमभारवा भूषा या उक्तिभर भी मपाइ भूष्यउत्राः भ मण्झु न प्रभाषां विद्रण वानितिकाक्षितः यनजीत क्षेत्रसेव प्रधेष्ठ एयउन्गः १ पनण्यभन्द्रानीय भ इणि उन्धियः वल्लक्ष्मानवारामभुश् र्य उनगः १ कामनव उप उनभागविनिर मान प्रः वे र तत्र एने भागतन प्रश्रम्य प्रम ग्भाउत्य इन गरा है वन स्था अगरा वा भाग र इत्यम्बरम्य वर्णाल्य उत्तरः श्राम् र्गितनमन्त्रम्हम्ब्रीए५ भप्रकाश्वर

बेमग्रीभव्केत्रायम्मर्थिययम्भः ०.उत् भाण्यव मेवज्यवायाभाग्यवः विद्णम उडे एडे एक प्रमृतियन लः ०० प्रमुक भभवगानिर्डाज्यभवकः वल्लकगुरु वाराष्ट्रमण्डियद्वराः १३ त्थिकस्र उनिर्वकण्यणम् भन्यान्य त्र गंरपे ए एउए पर १३ म इति क्रायायीयीयात्रज्ञात्रभाषा क्र न्य निर्मा स्थानित स्थान क्रमुग्ठवग्रामीध्यकदग्रभ्य वेष्टांथवामीभणनेभावशार यउँगाः भित्रदीननकप्रएनाम् ग्रेच्दनः नीमकप्रचनुग्राप्तिर्वेष्य उनगः य जनहात्र वर्षेत्र के इस्ट्रान्स्य

किस्वद्रम

भद्भण हैसे वण मध्यिन गरंग मह पडे अ। रिक्रिकिकलभाष्यिय नियम् एयिज्य यह दिव दलभाग्य स्वा उ न्यतः सपल्यो किविन्यः प्रभट्टे वर्क वीयत्रयं एयउन् । १०।०।००।००१५न क्राभवलक्रभभुक् बग्मी क्वारिन हमः भवकालए पेपुद्व उर्यु उर्पाए यउत्राशाशाशाशाशाहरुष्या येकला इ. भी उउ भी रंग भवमा मीया प बिग्रमुगः एप।पाएयउगः॥ ।। ।। ।। ।। ।। ।। एतिएएए।। भीव उठ प्रकाभी मिषिवी हा भि रमद्रभः भरुवाद्रभग्गारः पुरुष्ण यउनगः।या०-१०४।१८/हिप्रसः। क्रिम्भेव उक्दि यिनिष्ठभिषकति स्यः भवकृद लभ उद्वितां ये ए यु उन्मार्थ वर्षित

A P

निजा । निष्य तथकता निष्य । निष्य । र लेउन प्रयुक्त अभूप लहावहमा त्रमन्द्रमालहं हिल्पभद्रभूति उपि जणा ॥न ।। यथ व महो। में भिष्विल गुमुर भुगा भाष्ट्रयवामुका उद्याग्य स्ताना एभेलभाइन्त्र द्वारा निया उर्रीयरमे उवित्यमं अत्वेणने क भिउपनिश्तः गर्वगाउकारामस्य थमभू जिक् व्जिविद्य विद्यान्। यूग्रमभू मण्ड जगमाक्री उप्पेली वै किनवाभितः श्राप्तम् त्राविष् थुरुवि विष्ट्रित्र एत्रमालाका भिंदिवित्र किन्ये भवता भिंदिय् भंदित्य लेगदिएः प्रियाभिष्रां ए अत्व भानेगा श्री उच्दाक्षियम् यु मालि॥ यह वित्यम

किंव ७ ५

उनक्राधी जीरेपकारले लया माया है। ग इसिल्डिन्य का क्रांकिट भारत्य विषावान(।क।।उगम्बन्तवगाउर्धेउम्म नम्मिवनम्प्रमीलाः त्वष्रउभ्रम्भते लभाषात्रिणान्भथुर्विणपुषुम्।।।।। र्श्य के अचित्र में भेज उपलिख्य प उभव इ.जः ग्राश्वदाधद्र पुलस्स प्रतियम्भववित्राभ्यः॥व्या ण्यते गंधवविलयभे भगभालाम्य वितामक्रिः उद्याव्ये अर्धायाः वक्रिनियम्पक्षेष्ठउप्तथ्वः जं। भुः स्व लग्रम्भठामाप्रकामग्रम कारभाषे भगशः वारा अके वा वि िग्यडाम्याम्याम्य इत्र्यन्त

भा ।।।भा अतिवित्र यस्त्र नामक भा अति। गुन्निविभ्राष्ट्रग्राभूनः सीअभूने वत शह अ उ अन्वर्धपन् पवपरा भा अ ॥ जाभी निवल ग्रम् डिमार करिए व भूष्यान्यवेर्यानः विमारिङ सेव व उप्तरंत्र भन्न स्तरं द्वा भिष्णा गण्यः ॥भाष्णिलगढलभ्याम्प्रवर्गम् लभागवर उर्ग उरम्भ गुस्रम कल्पश्रिकारभयवराभागील्य न अवककमहनम् रे प्रनावल्यकः म वास्तुनापीक्णिक्षामगभानीभदि क्रग्णम्बर्गाभाग्रसिक्षेत्रिक्षेत्रीमपसभी प्रमहीन्द्रिय।। नाक उन्नलगाउथे प्र

العم

स्वयाचार्द्धरःरागिर्भप्यक्रकेत्रम वाकरप्रभाजनीय अवक्रान्य केनियरित्रभाषा २५३:नेनीपीप्राय युभमार्थ्याकार्भाष्ट्रमण्डम् गरेग धालल भग्रथम ग्रामल प भक्त माथवर्डः जान्त्र अवल्प प भिष्ठ चार्डि देगी उविश्वाम बाहिये पव अठक भगउगाउप्यय उति स्थान ॥ युवर् र र र र भारत र कार भी मालरभाग्य सेवा हा सुरामान पण्नेश्वष्ठात्रमञ्जूषाः भागास अपितवम्भया या यह उसत अघष्टा नगिक भूविम् भिर्ते र उसु म हिथ्यः ॥क।।डी क्रुभुल उरविमालवम् रः विभिवि दियं अ ए भी निषीश्यभा अक नर भन क्रिडिक रिक्रमा किए प्रदेश के निमानी िउच्यावानि स्उभागीवगरिउभी म् उबिण्ये हक्।।सं।।बीठ भ अवमान वीकि उर्म से भराम से अ रुग्डल भनिय म भु जविद्वी कः नणवी प्रशिष्यवमिति उस्मेष्ट उक्ट ग्रंभग्रहमगर्भेष्म हर्क्ट भूल मुष्रगः।।क।। स्वव्यान्भागप्रभागग उपोक्षः मुणिभी लिउः प्राम्भे त्र उरा भिकेत्र उउत्र गारिए ने जा विष्ठः प्रीन प

(1) 10 BC

वियावस्थित अभिन्य विवासिप्र प्राच हिल्भार् अस्ताय प्रकारक विरादि उन् अग्पेश्वपुत्रगाउगार्धव सत्रपत्वकेच ए क्षेत्रर र नक्य पविष्ठा चे पविष्ण उस् नग्रीकालभृष्ट्यिक उद्यादम् सम्बन्धित मणगद्भ तिपान्नित्रः।। दे।। द्यारा थमार्वित्राच्यायाः गौकविवीरवाः य नुभूतणन्य उपयोगकणप्रश्रीत्य विडा अष्ट्रभभाषीमभाभत्यकृताग्रक वाधिइवादिनिय्यभाषानिवसभाषेणेक भाष्ट्रत्रः जंग निरंताल परिश्व मण्ड उनका भप्राप्त्रमः भाकाकाभकतिन्द्राउवम नभारायम् ज्ञानाः मी इल्पन्तर्गणन्स् करणराषिकेगाउठ लाइयथूएर प्र

\$ 50 G

भूमिर उभार् अति प्रथ्य नि।।मं।।कारक गिमान ताप वर्ग भाषा या अवस्थित प्रमाण वर्ष विएन प्रमुक रेए १० या भग्नाम गुज्य थविषेत्रकृतिविष्ठि प्रज्ञान्यन्त्र समान्त्रभग पहराष्ट्रिष्ठ गर्जाएल्स्र मण्डि अभिविद्याप्य या विकास मार्गियम म उभुद्गन्भव ५६: प्रक्रियु भउपा भी लिउसा नरा कि: रितितिप्य रागा भिष्ठ सु जुगमा। भाषि । उगमिदत श्चिमा भा भुः ॥ हि ॥ छ स्वकंव कतं लिए उगारि अरुप्यथम अह्म युव्य अवल् ज्ञाभा उभद्भवन थ्वक्रक्षाय विम्बला ज गुक्रत्य करोडू यालभाउन वे णियम दें न देश नी ते मने अनक म

उराः कारानिस् भः भे त्वस्ति वित्यभ जिलगभंदेतिया व्योगक के चेपडें विनेष्ठत पनिएउने लायं क्वेडर्।।१।।द्विभम्भ उपाम रागीविनस्विर्वाहिभाष्ट्र मुर्भाष उभागः अप्रकाश्यक्षेत्रभाष्ट्रमा अ।।विद्रा उत्तय के विश्वसभाषण भु अ पर्ग भू द लेक भनीकेग भये। फ्रीएउ इस्थन स अवस्त न इविदीनपोति उरु स्यः म उज्ये भट भडग्र प्रवासकरेकवाउनगः इत्यभनी मर भाषभङ्गव उविद्वितिक निर्मा कि इन स वक्षप्रसाः भणवीण्यमित्रभयः प्रस्व उिपान भारत मार्व मार्थ रामा का वित लवा सम्भाष्ट्रिज्याने मीनाविष्टाउरा ~र अप्रवेष द्वा यक वा पि निम्किये

LAFE BE WELLAST HITH

विक्र उ: द्वाम विशेष्ट्रा विद्रयेग अने रूप बहुन भनु थ्रेगान गडे भ बाउँ सि कु जी मा विक लान पेने छून में भाषण नदीने त्याणि विक्रियनेषः ठ वाउम्भद्भ भप्राप्त्र विउल्निविद्य भन् थः उग म् भिर्योषि में सीनव गेडपन थड कुः शुरु १।। मित्रिक्षिक्व न त्राप्त्र भ्रावना भदेशिक्षा गर्भ स्रोप मान्य पर्म मान्य व भाष्ट्रपनिग्उवलग्द्रेष्ट्रः प्रष्ट्रेषिक्षण्य हर्ष एक मन्निन्निन्द्र है उ. नि इक्म भ०० विकलमगग्रहा अधि उ रहाथारी: भारताहुः साम्याहुः लगढ़ उर पउन्न का का का का का का ्रित्रेन्ट्र विद्वाल प्रकार्य प्रमानि हे स थण्नहेगगुन्ध्यानम् क्तुत्वीग्रवेषकाल्

\$ 10 E